



दुनिया और प्रेम राह

प्रेम सखी



अरदास

हमें अपने आँचल में सदा रखना दाता ।
बुरे कर्म और विचार से हमें दूर रखना ।
हम विचारों से भी किसी का बुरा न करें,
इतनी शक्ति हमें देना ।
ज्ञान और इंसानियत का दान सदा हमें बनाए रखना ।
दया, प्रेम, और सहजता हमारे मन में सदा रखना ।
हम फूल तेरे बगीचे के सदा अपने चरणों में सजाए रखना ।

अपना ही घर पराया

मैं अपने घर से ही बेघर हो गया ।।
मेरे बनाई दुनिया में ही मुझे रहने के लिए जगह नहीं मिली ।।
मैं हर कण में बसा, आज वही कण मुझे चुगना पड़ा ।।
इंसानियत धर्म मैंने बनाया, वही धर्म इंसान भूल बैठा ।।
आज मैं अपनी बनाई रचना में ही रचना बनकर दीवारों और चित्रों में रच-बस कर रह गया ।।
मैं आज अपने घर से बेघर हो गया ।।

प्रेम का रंग

तेरा रंग बड़ा अलग, मेरा यार ।।
कोटी रंग जग में, तेरा रंग में रंग जा ऐसा कोई नहीं, मेरा यार ।।
मुझे सब रंग फीके लगते, जब मैं तेरे रंग में खोता हूँ, मेरा यार ।।

कहते हैं एक ही सच्चा प्रेम रंग चढ़ता है, जो प्रेम सखी को तेरा रंग चढ़गा मेरे यार ।।

मेरी माँ: जग की शक्ति

जमीर खुगा री इस जग का, मेरी माँ ।।
फूल चढ़ा को देवी पूजा, नारी न जूती समझा री, मेरी माँ ।।
भगत शिव जी का कहते, न कोई योगी न दया सहज, बजा जग री, मेरी माँ ।।
श्री हनुमान न आराध्य बताव्या, प्रेम भक्ती न बची जग में, मेरा माँ ।।
माता सीता जैसी पत्नी की इच्छा मन में राखा
, श्री राम सा नहीं कोई, जाग री मेरी माँ ।।
राधा कृष्ण जैसी प्रेम यारी चहाता, त्यागी नी कोई जाग री मेरी माँ ।।
प्रेम सखी को जग रीत ना भावा मना जग पागल कवा री मेरी माँ ।।

खुदा से अरदास

रहमत रखना मेरा यार, मुझे एक तेरा सहारा है।
यह विश्वास टूटे ना कभी, यही खुदा के सामने उचारा है।
तुझे मिला होंगे बहुत से मुझ जैसे, मेरा एक तू ही यारा है।
इस अजब-गजब दुनिया में कोई नहीं किसी का प्यारा है।
प्रेम सखा को साथ तेरा, तू ही जीवन आधार है।

प्रेम और समाज की स्थिति

कैसा समय आया प्रेम से ही नफरत जग की यारो।।
प्रेम द्वीप में धन का अहंकार और काम दिखता और चारों।।
हम धर्मिथी धर्मिथी सब कहे पर
इन्सानियत ना दिशा चारों।।
भगवान बांटे बांटे मज़हब सारे
इक दूसरे से लड़ते लड़ते जग छोड़ चलेगे सारे ये कथ ना समझे तरफ चारों।।
दया सहज और विश्वास सब खो बैठे आज कमल हृदय तोड़ना हुआ आसान तरफ चारों।।
अब आर्कषण के दौर में लड़का लड़की के बिच खड़ी गलत विचारो की दिवारे तरफ चारों।।
प्रेम रूप राधा कृष्णा मर्यादा रूप श्री राम पत्नी व्रती माता सीता ने जिस द्वीप को किया पावन वहीं गिरा
है राजनीति अंधेरे में तरफ चारों।।
प्रेम सखी, चिंता में, आगे क्या मंज़र होगा मेरे प्रेम देश भारत

मुलाकात

ना किसी से दोस्ती ना किसी से याराना था।।
तूझे से मिलने पर खिला इक ज़माना था।।
अनजान था मैं उस राह से जिसे तूझे पाना था।।
तूझे तक ना पहुंचा ये दिल का पामाना था।।
पता नहीं खुदा की क्या मर्जी थी।।

दोबारा तूझ से मिलने या बिछड़ा ना था।।
ना किसी से दोस्ती ना किसी से याराना था।।

जल

जल ! मैं शीतल रहे कर भी बद्नाम हो जाता हूं।।
बद्नाम होकर भी मैं शीतल हो जाता हूं।।
मानव के जन्म से मृत्यु तक मैं उस के साथ रहता हूं।।
मैं मानव के निकट जाता तो भी बद्नाम हो जाता हूं।।
मैं मानव से थोड़ा दूर जाते ही बद्नाम हो जाता हूं।।
मैं बरसता, बहता मानव के लिए मैं फिर भी बद्नाम हो जाता हूं।।
प्रेम सखी कहत जल से तेरा दूख समझू भाई! ।।
इस मानव की फितरत में तो मैं भी बद्नाम हो जाता हूं।।

प्रेम के अनमोल लम्हा

हे! रूह क्यों मिलकर दूर चली गई, ।।
अपने साथ क्यों मेरा वक्त ले गई, ।।
तुम ले गई मेरी जिंदगी, अब यह रूहु तेरा बिना अधूरी हो गई, ।।
बस यार अब मिल जाओ, क्यों वह एक अनमोल लम्हा दे गई, ।।
आज यह प्रेम सखी प्रेम होते हुए सखी बीन रहा गई ।।

काव्य के बारे में

कविता दुनिया की सबसे रहस्यमयी है ।।
हर कोई उसमें अपना-अपना दुःख देखता है ।।
कवि की भावना कविता में दिख जाए, ऐसा कोई काव्य नहीं है ।।
कविता लिखी नहीं जाती, रची जाती है ।।
जो सबको समझ में आ जाए, वो काव्य नहीं है ।।
कवि की भावना को तो भगवान भी समझ न पाएं ।।
जो समझ जाता है, वो दुनिया रचने वाला,
वो काव्य लिखने वालों के पास नहीं आता ।।
जो पत्थर को भी जल बना दे, वो काव्य है
काव्य सबसे रहस्यमयी है ।।

अनमोल प्रेम और जीवन के प्रतीक

धरा पर फूल बहुत पर गुलाब सा नहीं कोई,
धरा पर पक्षी बहुत पर हंस सा नहीं कोई,
धरा पर शस्त्र बहुत पर कलम सा नहीं कोई,
धरा पर रूह बहुत पर राधा-कृष्ण सा नहीं कोई,
प्रेम सखी न प्रेमी टोये पर सच्चा प्रेमी ना कोई।

प्रेम यादें

मैं रहना लगा हूँ तारे ख्वाबों में।
मैं जितना दूर जाने की कोशिश करता,
उतना ही खो जाता हूँ तारे यादों में।
मैंने सारे फूल छोड़ दिए प्रीत
की गुलाब से,
अक्सर अब प्रेम सखी बचती प्रेम हवाओं से।
फिर भी मन रमा प्रेम बारिश के बादलों में।

"अरमानों का टूटता सपना"

लाख गए, लाख आए ॥
कोई मिला नहीं अपना सा ॥
एक मिला बड़े अरमानों से ॥
फूल खिला, फिर जड़ गया सपना सा ॥
नाम बिछड़ा, गलबिछड़े ॥
बिछड़ गई यह रूह ॥
लाख गए, लाख आए ॥
कोई मिला नहीं अपना सा ॥

प्रेम और यारी की बस्ती

कहीं तो खुदा ने ऐसी बस्ती लिखी होगी,
जहां प्रेम और यारी होगी।
जहां सिर्फ मेरे जैसे होंगे,
प्रेम जहां लहराता होगा,
यारी वहां छलकती होगी।

इंसानियत की हवा होगी,
अपने-अपने प्रेमी की मस्ती होगी।
न धन, न जग की कड़वाहटें होंगी,
न वहां राजा, न राज होगा।
दयालुता और सहजता का वहां शासन होगा।

विश्वास का जल धरती में होगा,
कहीं धोखा नहीं होगा।
जहां बस प्रेम और यारी होंगे,
प्रेम सखी अंततः आनंद वही होगा।

कहीं तो खुदा ने ऐसी बस्ती लिखी होगी,
जहां प्रेम और यारी होगी।

प्रेम की तड़प और यादों का सागर

प्रेम किया जिससे, वो दूर हो गई।
अपनी यादों का खज़ाना दे गई।
रूह तड़पती है उसकी एक झलक पाने को,
वो कांटों का सहारा देकर, आंसुओं का प्याला ले गई।

रोने का दिल करता है, पर आंसू यादों में घुल गए।
दुनिया के बीच रहकर भी,
प्रेम सखी उस प्रेम सागर में डूब गए।

रूह की तड़प और प्रेम का अहसास

इक यार बसदा रूह विच,
उस खातिर जग छोड़ दिता सारा।
जब वो निकट होंदा,
तन की सुध बिसर जांदे सारा।

ना प्यास लगदी, ना भूख लगदी,
बस वही रूह विच ही रहंदा,
पल-पल इक उर मन विच रहंदा,
कहीं वो दूर ना हो जावे,
वो प्रेम रूह दा परिंदा।

प्रेम सखी मुरादां विच मंगदे, उस यार नूं।

इक यार बसदा रूह विच,
उस खातिर जग छोड़ दिता सारा।

उड़ान का अकेलापन

देखो, एक पक्षी ने उड़ना सीखा,
उड़ते ही चहचहाना सीखा।
बचपन में अपने साथियों का साथ रहता,
अब उड़ते ही खुद को अकेला पाता।
पहली उड़ान भरी, उसने अपनों की तलाश में उड़ान भरी।
पिंजरे में घुटना छोड़ा, आकाश का हाथ पकड़ा।
अब न कोई ठहराव, न कोई साथी मिला।
उड़ते-उड़ते, अलग पक्षी से मिला, दाना मिला, पर न किसी का साथ मिला"
अपनों की तलाश में सब छोड़ चला।
बहुत टूटा, बहुत अपनापन तलाशा,
दुःख इतना, नैनौ निर भी आकाश में उड़ चला"
किसी ने हाथ नहीं पकड़ा, मन और आत्मा से टूटकर वहां समय सागर में समा गया
प्रेम सखी कोटी पक्षियों के बीच रहकर भी वो काल की चादर ओढ़े सो गया

दुनियादारी और प्रेम का सफ़र

कुछ मैं दोस्ती लिखता, कुछ प्रेम लिखता हूँ।
कुछ किसी की याद लिखता,
कुछ किसी के जाने का दुःख लिखता हूँ।

कुछ ग़म लिखता, तो कुछ सुख भी लिखता हूँ।
कुछ नफ़रत लिखता, तो कुछ इंसानियत भी लिखता हूँ।
कुछ झूठ लिखता, तो कुछ सच भी लिखता हूँ।
कुछ सपने लिखता, कुछ हकीकत भी लिखता हूँ।
कुछ फूल लिखता, तो कुछ फूल से व्यक्तित्व लिखता हूँ।
कुछ दुनियादारी को लिखता, तो कुछ प्रेम सखी को भी लिखता हूँ।

प्रेम का सच्चा रंग

तेरा रंग बड़ा अलबेला, मेरा यार ॥
कोई रंग जग में ऐसा नहीं,
जैसा तेरा रंग, मैं रंग जाऊँ, मेरा यार ॥

जब तेरे रंग में डूबता हूँ,
मेरा मन को दुनिया के सारे रंग फीके लगते हैं, मेरा यार ॥

सिर्फ एक सच्चा प्रेम का रंग चढ़ता है,
जो प्रेम सखी का है,
तेरा रंग चढ़ गया, मेरा यार ॥

इंसानियत की पुकार

एक फूल को कब तक बांटोगे?
राम-खुदा को बांटकर, पीने के पानी को कैसे बांटोगे?

इंसान को धर्मों में बांटकर, हवा को कैसे बांटोगे?
ऊँच-नीच, जाति में बांटकर, आसमान को कैसे बांटोगे?
धरती माँ ने रोकर पूछा,
"क्या अब इंसानियत को भी बांटोगे?"

प्रेम और संबंध की समझ

हर फूल महसूस नहीं होता,
हर किसी की रूहु से यारी नहीं होती।
हर भावना में रिश्ता नहीं होता,
हर विचार सत्य नहीं होता।
कहत प्रेम सखी,
हर किसी से प्रेम नहीं होता।

प्रेम की अद्भुत प्रीत

प्रेम भी अजीब प्रीत, एक दूजे के प्रति
पागलपन और त्याग की रीत।
हाथ लिया जान की रसीद, कब छूट जाए तन की प्रीत।
प्रेम सखी मछली और पानी-सी प्रेम प्रीत।

पैमाना

प्रेम का पैमाना, रूहु में समा गया।
पता नहीं कौन रूहु होगी, जिसे रूहु पैमाना देगी।

पता नहीं कौन इस पैमाने को पढ़ पाएगी।
पता नहीं कौन रूहु इस रूहु में समाएगी।
या रूहु पागल है, जो सबको अपना बनाकर रखती।
पता नहीं कौन प्रेम सखी को अपना बनाएगी।

प्रेम

प्रेम भी कैसी प्रीत, यारा।
किसी को होती नहीं, यारा।
किसी को होती है, पर जग उसे होने नहीं देता, यारा।
प्रेम जितनी खुशी देता है,
उतना ही रुलाता भी है, यारा।
प्रेम सखी, प्रेम रोगी, इसकी दवा कहाँ मिले, यारा।

सच्चे यार का साथ

तेरा यार होगा बहुत, यारा,
मेरा इक तू ही है, यारा।
कैसे भूलूँ तेरे साथ बिताए वो लम्हे,
मेरी रूह तुझे अपना कर गई, यारा।
अब तुझे खोने का डर हर पल सताए, यारा।
अब तुझसे मिलने की मन जगी इच्छा, यारा।
सब नाते तोड़कर तुझसे यारी रखूँ, यारा।

खोया सितारा

अनगिनत तारों में मेरा सितारा खो गया।
गुलदस्ते में वो फूल कहीं बंध गया।
पता नहीं कब वो सूरज मिलेगा,
कब अंधेरे में चाँद खिलेगा।
भटक गई अब वो रूह,
पता नहीं कब दीवानों की महफ़िल में मिलेगा।

अनोखा प्रेम

अनोखा है प्रेम भी,
अपने आप पर लाखों ज़ख्म सहता।
पर अपने प्रिय पर,
तिनके की चोट भी नहीं सह सकता।

यारों की महफ़िल

पता नहीं कब यारों की महफ़िल जमेगी,
कब वो यारों वाला जाम बनेगा।
इस बदलती दुनिया में, यारों का मद्रियाला कब भरेगा
सब सूनी पड़ गयी
, वो दीवानों की बस्तियाँ,
जहाँ पहले यारों की महफ़िलें मिलती थीं।

सूनी रहा गयी अब वृक्षों की
छाँव, जहाँ यारों की बातें चलती थीं।
रातों का पता नहीं चलता था,
जब यारों की महफ़िल जमी होती थी।
सब बिछड़ गए, अब सब रूहें,
अब सब अकेले रहना सिख गए।

प्रेम फूल

पल-पल आँखें उसका दीदार देती,
पल-पल रूह उसे याद करती।
कुछ पल मुलाकात हुई उस से,
उन्हीं पलों में वो अपना कर गई।
प्रेम पल वो मुझे दे गए,
पता नहीं चला कब वो दूसरे पल ही दूर हो गए।
अब उस पल का इंतजार है,
वो नूर इस रूह को कब दीदार देगी ।

प्याला प्रेम का

अब पल-पल प्रेम प्याले में पीता,
मैं जागूँ, सब जग सोता।
अंग-अंग निखरा उसके नाम से,
आँखें तरसती, कब वो दीदार देगा।

प्रेम सखी, क्षण-क्षण
तड़पे, कब वो रूह हाथ पकड़कर ले जाएगा।

मेरा एक तू ही यारा है

मेरा एक तू ही यारा है,
अन्त शब्द फीके तुझे व्यक्त करने के लिए,
तुझे एक प्रेम शब्द, दोस्त से ही पुकारा है।
तेरे अलावा हाथ पकड़ा नहीं किसी का,
ना किया किसी से याराना।
प्रेम सखी, मुग्ध हुई तुझ पर,
तुझ से यारी ला, दूसरा नहीं यारा बनोना है।
मेरा एक तू ही यारा है।

प्रेम प्रति जीवन लाए

छड़ी प्रति सारा नू,
एक प्रेम प्रति जीवन लाए।
छड़ी मात-पिता, कुटुंब छोड़ दिया सारा,
तन त्यागा मन पखारा, प्रेम संग यारी लाए।
जग पागल कहाँ और बहुत निदा सही,
अब प्रेम सखी, न प्रेम प्रति लाए।

आज की सच्चाई

आज यारों की महफ़िल बदनाम है ॥
आज प्रेम-निगाह खराब है ॥
आज दौलत के साथ बिकता ईमान भी है ॥
आज हर घर की चौखट नफ़रत से लाल है ॥
आज भाई-भाई के बीच दौलत ही संसार है ॥
प्रेम सखी, आज हर शख्स दूसरे को अपने कदमों में चाहता है ॥

नारी की शक्ति

नारी बांधे संसार चली ॥
चारों युगों में दानवों का संहार कर चली ॥
कहीं फूल, कहीं अगन लेकर चली ॥
कहीं काल, कहीं मानव की सोच को चुनौती दे चली ॥
आदि-अंत को समेटे अपने में, मुख पर मुस्कान ले चली ॥

रंगों की अनोखी बात

हर रंग की अपनी एक बात है ॥
पर जिस्में हमें घुल जाना था,
उससे कभी कोई बात नहीं हुई ॥
वो रंग बड़ा निराला था,
जो इतने रंगों के बीच भी अपना कर गया ॥

उस चंद लम्हे को जीवन बना दिया,
एक बार दिखकर आसमां का हाथ पकड़कर चली गई ॥
कुछ तो बात थी उस रंग की,
जो बेरंग फूल को भी अपना रंग चढ़ा गई ॥

प्रेम का संकल्प

पत्नी व्रत का निर्णय किया,
कैसे दूसरा वर अपनाऊं मैं?
रात-दिन उसकी सेवा करती,
कैसे दूसरे के चरण में शीश झुकाऊं मैं?
जैसे रखे, वैसे रह लूं
सदा प्रेम नाम का घाट बसाऊं मैं।
कुमति त्याग, सुमति में बसूं
प्रेम-नीर को अंग-अंग बहाऊं मैं।
प्रेम सखी, ना प्रेम किया,
एक से ही विवाह रचाऊं मैं।

मुस्कान की शक्ति

कमल के समान खिलते,
पत्थर को भी नीर करते।
हजारों को भी सुख देते,

दुखी चेहरों पर दूसरों की मुस्कान देख, खुद भी मुस्कान खिल जाती।

प्रेम सखी, उम्र कोई भी हो,
हर एक की मुस्कान दवा का काम करती।

रूह का अहसास

रूह को देखा उसकी जब,
उस रूह को मेरी रूह उसे अपना कर गयी ।
जिसे अपना किया, उससे गल भी नहीं हुए।
उसके मिलने से पहले, जग से बेवफा थी जिंदगी,
उसके मिलने से दोबारा जीने की इच्छा हो गई।
प्रेम सखी, प्रेमी बन, उस रूह की यादों में खो गया।